5.5 CoIL-Net New Government Polytechnic, Patna Bihar

प्राचिन मगध, वैशाली, मिथिला, अंग, भोजपुर आदि जनपदों से बना बिहार प्रदंश भारतवर्ष की कीर्ति लता में खिला सबसे मनोहर पुष्प है। चँद्रगुप्त मौर्य, अशोक, समुन्द्रगुप्त, शेरशाह, राजा जनक एवं जरासंध सरीखे कुशल वीर एवं शासक, गौतम बुद्ध एवं महावीर जैसे समर्थ ज्ञानी सत्पुरूषों की यह धरती है। चाणक्य, पाणिनी, एवं शांतरक्षित जैसे कुशल राजनीतिज्ञ, आर्यभट्ट सरीखे गणितज्ञ एवं ज्योतिषाचार्य, मंडलमिश्र के समान तर्कवेत्ता एवं विद्वान, गुरूगोविन्द सिंह की तरह भक्ति, कर्म एवं ज्ञान के मूर्त प्रमाण, विध्यापति, रामधारी सिंह दिनकर एवं रामनरेश त्रिपाठी सरीखे कवि, स्वामी सहजानन्द सरस्वती जैसे योग विशारद, बाबू कुं अर सिंह, बिरसा मुंडा, खुदीराम बोस, राजकुमार शुक्ल, एल्बर्ट एक्का, चुनचुन पॉडेय जैसे स्वतंत्रता सेनानी, डॉ. जाकिर हुसैन एवं भारत के प्रथम राष्ट्रपति के रूप में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जैसे कुशाग्र बुद्धि सम्पन्न राजनीति के सूत्राधार बिहार के ही सपूत रहे हैं। श्री जय प्रकाश नरायण की सम्पूर्ण क्रान्ति की स्थली भी यही प्रान्त है।

विक्रमशिला एवं नालंदा जैसे विश्वविद्यालय वास्तव में बिहार के धरोहर रहे हैं जहॉ भारतवर्ष के बाहर अन्य देशों से भी ज्ञानार्जन हेतु लोग आया करते थे। वैशाली का लिच्छवि प्रजातंत्र जहॉ से प्रजातंत्र की परिभाषा का सृजन हो पाया है, बोध गया, नालन्दा महाविहार जैसे तीर्थस्थल जहॉ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के तीर्थयात्री आते रहते हैं, पूरे भारतवर्ष में सिल्क के वस्त्रों के श्रेष्ट निर्माता स्थल भागलपुर, भक्ति एवं तंत्र, वेद-शास्त्र आदि की दुलर्भ प्रतियों का संग्रह स्थल कामेश्वर सिंह मिथिला संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा, मधुवनी पेन्टिंग आदि कतिपय ऐसे उत्कृष्ट स्थल हैं जहॉ ज्ञान का अथाह समुद्र उन्मुक्त भाव में प्राप्य है जिसके चलते बिहार को भुलाया नहीं जा सकता।

बिहार के गौरवमय अतीत की गरिमा से पूरा बिहार आज भी गौरवान्वित हो रहा है। कहते हैं- च्कालक्रमेण जगतः परिवर्तमाना चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्य पंक्तिः च - अर्थात कालक्रम से इस परिवर्तनशील जगत में चक्के (चक्र) के किनारे की तरह भाग्य पंक्ति भी बदलती रहती है। इसी के अनुसार बिहार आज अन्य प्रदेशों की तुलना में पीछे है लेकिन इसकी पूर्व की अलौकिक संपदा की उपलब्धियों से नयी प्रेरणा लेकर आनेवाले कल को संवारने की, बीते हुए कल की असफलताओं का विश्वलेषण कर आने वाले कल की सफलताओं में ढालने की। लगभग 80 (प्रतिशत) लोग बिहार में गावों में रहने वाले हैं, उनके बोल चाल की भाषा आम तौर पर स्थानीय हैं, लेकिन सभी हिन्दी बोल, समझ, पढ़ एवं लिख सकतें हैं आम तौर पर इनका कर्म क्षेत्र बिहार या उस स्थानीय क्षेत्र में ही सिमट कर रह गया है। अतः इन्हें भी राष्ट्र की मुख्य धारा में जोड़ने के लिए आवश्यक व्यवस्था की नितांत आवश्यकता है। बिहार के सामाजिक आर्थिक विकास के लिए नवीन एवं प्रभावशाली प्रयास की आवश्यकता है। दिशाहीनता से निकजकर एकाग्रचित्तता, एवं लक्ष्य प्राप्ति पक्के इरादे के साथ ठोस कदम बढ़ाने की आवश्यकता है।

बिहार में CoIL-Net परियोजना का स्वरूप

CoIL-Net कार्यक्रम उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में बिहार को विकासशीलता प्रदान करने एवं सामाजिक-आर्थिक विकास युक्त बिहार के निर्माण में एक अहम् भूमिका निभायेगा। इस क्रम में इस कार्यक्रम के तहद अनेक लक्ष्य विन्दु निर्धारित किये गये हैं जो इस कार्यक्रम की उपलब्धियाँ होंगी।

बिहार में CoIL-Net कार्यक्रम का मूल लक्ष्य बिहार के सामाजिक-आर्थिक विकास में सूचना प्रौद्योगिकी का पूर्ण उपयोग करना हे। इस कार्यक्रम का मुख्य मक्सद सूचना प्रौद्योगिकी के लिए लोगों को तैयार करना (People for I. T.) अर्थात् ज्ञान कर्मियों (Knowledge Workers) को तैयार करना तथा लोगों की आवश्यकतानुरूप सूचना प्रौद्योगिकी को तैयार करना अर्थात् सूचना प्रौद्योगिकी समर्थित या जनित सेवाओं (I.T. enabled Services) का विकास करना-दोनों ही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग से बिहार के व्यवस्थित एवं सम्यक् विकास को गति दिया जाना है। चूँकि सूचना प्रौद्योगिकी का मूल विकास आंग्ल भाषा में ही हो पाया है अतः इसे जनमानस तक ले जाने के लिये इसका लोकीकरण (Localization) आवश्यक है।

बिहार में CoIL-Net परियोजना के लक्ष्य

यह परियोजना तीन साल के लिए है एवं तीसरे साल के अन्त तक निम्नलिखित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाना है:-

1. परियोजना के अन्त तक सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग क्षेत्रों में लौकीकृत भाषाओं में अधिकाधिक विस्तृत करने का लक्ष्य है

- सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग सामान्य एवं उच्चतर स्तर पर प्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा अधिकाधिक किये जाने में तथा अधिक भारतीय, बिहारी, मागधी कन्टेन्ट्स को अंतर्जाल (Internet) पर आरुढ़ करने का लक्ष्य पूरा किया जायेगा।

- विद्यालयों में सूचना तकनीक के विभिन्न लोकीकृत मॉडयूल्स में प्रशिक्षण की व्यवस्था की जायगी।

- बिहार पर आधारित कम्पेक्ट डिस्क (C. D.) एवं वेवसाइट (Websites) का निमार्ण।

- कन्टेन्ट सर्जना (Content Creation)

2. एलेक्ट्रोनिक प्रशासन (e-Governance)

   एलेक्ट्रोनिक पर्यटन (e-Tourism)

   एलेक्ट्रोनिक ज्ञानार्जन (e-Learning)

एलेक्ट्रोनिक व्यापार (e-Commerce)

- कृषि
- अभियन्त्रणा
- स्वास्थ्य एवं चिकित्सा
- उपभोक्ता सहायता सेवाएँ
- सॉफ्टवेयर शोध
- तकनीकी सहायता सेवाएँ आदी

इस पूरे लक्ष्य को दो अन्तर्लक्ष्यों में विभाजित किया गया है ताकि CoIL-Net परियोजना का सम्यक् एवं समेकित संचालन संपन्न हो सके तथा अन्तर्लक्ष्यों के अंत में अन्तर्परिणाम (End Product) भी अपेक्षित तौर पर प्राप्त किये जा सकें।

अन्तर्लक्ष्य 1

इसके तहद् मुख्य तौर पर CD/Website/Portal का निमार्ण हिन्दी भाषा में इस केन्द्र द्वारा किया जाना है। सामान्य तौर पर 4-CDs का निर्माण प्रतिवर्ष किया जाना उचित होगा जिसमें प्रत्येक CD में निर्माण किये गये कन्टेन्ट की गुणवत्ता की जॉच विषय विशेषज्ञों से कराये जाने के उपरान्त ही इन्हें लोकोपयोग में लाया जाय। ये लोकीकृत हिन्दी भाषा में स्थानीय के लिये तथा आंग्ल भाषा में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के लिये तैयार किये जायेंगे।

CD एवं Website निर्माण के क्रम में इस केन्द्र का लक्ष्य है कि कन्टेन्ट निर्माण निम्नलिखित क्षेत्रों में किया जाय:

- बिहार की विभूतियों पर आधारित
- एलेक्ट्रोनिक पर्यटन के क्षेत्र में
- सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से वातावरण संज्ञाण (Environment Awareness) का कार्यक्रम भी रखा गया है जिसके तहद गंगा प्रदूषण एवं लोक-भागीदारी (Public Participation) द्वारा इसकी सफाई का भी संज्ञान (Awareness) दिया जायेगा।
- स्वास्थ्य एवं पौष्टिकता या स्वच्छता

  इसके तहद स्वामी सहजानन्द सरस्वती के बताये मार्गो द्वारा स्वास्थ्य लाभ की दिशा में सूचनायें एवं ज्ञान Online एवं Offline दोनों ही प्रसारित कराने का लक्ष्य है
- विज्ञान एवं प्रावैधिकी के क्षेत्र में भारतीय स्थापत्य कला (Heritage)

अन्तर्लक्ष्य 2

इसके तहद मुख्य तौर पर (Multimedial) बहुमाध्यमीय प्रशिक्षण सुविधा का समावेश किया गया है। जिन वर्गो को इसके तहद प्रशिक्षण दिया जाना है वे हैं-

- विद्यालय स्तर के विद्यार्थी
- विद्यालय स्तर के शिक्षक
- सरकारी कर्मी
- पंचायती राज कर्मी
- अनियोजित स्नातक
- आर्थिक तौर पर कमजोर वर्गो के लिये
- स्थानीय उद्यम के कर्मचारी
- शिक्षित गृहिणियां
- सामान्य स्टोर एवं दुकानें
- विकलांग व्यक्ति

इनसे संबंधित विभिन्न गतिविधियॉ है (Related Activities are:)

- लघु आवधिक पाठयक्रमों के पाठयांशों को (Course Materials) हिन्दी में तैयार करना।
- विभिन्न सर्वविदित (Popular) पैकेजों एवं भारतीय भाषाओं पर आधारित प्रशिक्षण अंगो (Modules) का निमार्ण।
- सामान्य जन में इन कार्यक्रमों की जानकारी प्रेरणात्मक कार्यक्रमों (Motivational Programmes) एवं सरकारी सूचनाओं एवे विज्ञापनों (Publicity) द्वारा दी जायगी।

  उपर्युक्त विन्दुओं के आलोक में CoIL-Net परियोजना के इस कार्यान्वयन इकाई द्वारा निम्नलिखित अन्तरवधि लक्ष्य या अन्तरूपलब्धियाँ (Intermediate Milestones) निर्धारित की गयी हैं-
- आवश्यक हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर की मदद से सूचना प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण प्रयोगशाला की स्थापना एवं भाषा वैज्ञानिक पक्ष के साथ
- एलेक्ट्रोनिक पर्यटन (e-Tourism) के लिये जॉच क्षेत्र (Test Bed) का निर्धारण।
- सूचना प्रौद्योगिकी लोकीकरण चिकित्सालय कार्यक्रम (I.T. Localization Clinic)

- प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

कम्पेक्ट डिस्क (CDs) निर्माण

- बिहार की विभूतियॉं
- एलेक्ट्रोनिक पर्यटन (e-Tourism)
- भारतीय स्थापत्य कला (Heritage)
- वेवसाइट (Websites) का निर्माण एवं सूचनाओं को उसपर आरूढ़ करना
- एलेक्ट्रोनिक शिक्षण (e-Education) के लिये जॉच क्षेत्र का निर्धाण एवं विकास
- कृषि सूचनाओं पर आधारित कन्टेन्ट का विकास
- पंचायती राज्य प्रणाली पर कन्टेन्ट का निर्माण
- एलेक्ट्रोनिक ज्ञान (e-Learning)
- एलेक्ट्रोनिक स्वास्थ्य (e-Health) के लिये जॉच क्षेत्र का निर्धारण एवं विकास
- एलेक्ट्रोनिक स्वास्थ्य या आहार पुष्टिकरण (Food Nutrition)
- पर्यावरण ज्ञान (Environment Awareness) / स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य वर्द्धन (Health Hygiene)

क्रिया योजना (Action Plan)

CoIL-Net परियोजना के सफल क्रियान्वयन के लिये निम्नलिखित कार्य प्रारम्भ किये जा चुके हैं।

बिहार की विभूतियों एवं बिहार में पर्यटन से सम्बन्धित सूचनायें प्राप्त करने एवं उन सूचनाओं पर आधारित संक्षिप्त तथ्यों का निमार्ण करने तथा निर्मित तथ्यों को प्रमाणन के क्रम में अभी तक कुल 108 बिहार की विभूतियों का चयन कर उनसे सम्बन्धित दस्तावेज भी प्राप्त किये जा चुके हैं। इनका कन्टेन्ट डिजिटाइजेशन इनके क्रिया क्षेत्र के अनुरूप आवश्यकता एवं प्राथमिकता के अनुसार चयन कर शुरू किया जा चुका है।

एलेक्ट्रोनिक पर्यटन (e-Tourism) के क्रम में गौतम बुद्ध के उदबोधन क्षेत्र बोधगया से लेकर नालन्दा पावापुरी तक बौद्ध भिक्षुओं एवं बौद्ध धर्म के अनुयायियो के लिये तीर्थ-स्थल विषयक पर्यटन क्षेत्र के रूप में रेखाकित किया जा चुका है। पर्यटन में इस पावन पर्यटन क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति, वर्तमान स्थिति, उपलब्ध साधन एवं भविष्य में इस क्षेत्र का बाह्य शैलानियों के लिये पर्यटक स्थलों के रूप में विकास हेतु आवश्यक कदम उठाये जा रहे हैं एवं यह जानकारी इलेक्ट्रानिक माध्यम में उपलब्ध कराये जा रहे हैं।

बिहार सरकार के पर्यटन विभाग एवं इस CoIL-Net केन्द्र एवं पर्यटन विभाग के बीच MOU किया गया है। जिसके तहद् बिहार के पर्यटन विभाग के लिये एक वेवसाइट (Websites) का निमार्ण यह केन्द्र करेगा तथा वर्तमान पर्यटन केन्द्रों से संबंधित तथ्यों (Contents) एवं पर्यटन स्थलों के विकास के लिये वांछित आवश्यक तथ्यों का डिजिटाइजेशन हिन्दी में करके वेवसाइट (Websites) पर लाया जायगा। इन पर्यटक क्षेत्रों से सम्बन्धित तथ्यों के प्रमाणन का कार्य विशेषज्ञ इतिहासकारों एवं पुरातत्ववेत्ताओं से किया जायेगा।

वेबसाइट का निर्माण उसके आमुख पृष्ठ का बिहार के परिपेक्ष में बेहतर डिजाइन एवं विकास, कन्टेन्ट डिजिटाइजेशन एवं डाटाएन्ट्री से सम्बन्धित कार्य प्रारम्भ किये जा रहे हैं।

कन्टेन्ट डिजिटाइजेशन के फलस्वरूप सामान्य जनमानस के समक्ष उनका प्रर्दशन कर, उनके मन्तवयों को प्राप्त करना एवं तदनुरूप फीडवैक (Feed back) द्वारा कन्टेन्ट निर्माण को सामान्य जनमानस के लिये आवश्यक संशोधनोपरान्त ग्राह्य बनाने के लिए एक विशेषज्ञ दल बनाया गया है।

प्रगति प्रतिवेदन

Coil-Net परियोजना के क्रियान्वयन में निम्नलिखित प्रगति मूलक कार्य हुए -

(अ) सूचना प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण प्रयोगशाला की स्थापना

सूचना प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण प्रयोगशाला की स्थापना कर दी गयी है तथा इसमें निम्नलिखित H/W एवं S/W का अधिस्थापन किया जा चुका हैं-

Hardware -

Server (Pentium P IV), Nodes (Pentium PIV)

Softwares -

C-DAC निर्मित निम्नलिखित S/W प्राप्त कर कम्प्यूटर सिस्टम में अधिस्थापित किये जा चुके हैं-

ISM Office 2000, Shaili C. D. Title, GIST-SDK, Leela Praveen, Leela Prabodh, iplug in, Leep Mail

(ब) कन्टेन्ट क्रियेशन

(i) बिहार की विभूतियाँ

इस केन्द्र द्वारा कुल 108 बिहार की विभूतियों को चिहिन्त किये जा चुके हैं। जिनका कन्टेन्ट डिजिटाइजेशन का कार्य प्रगति पर है।

(स) एपलीकेशन डेवलपमेंट

एलेक्ट्रोनिक-पर्यटन (e-tourism)

बिहार के पर्यटन विभाग के साथ एक MOU किया गया है जिसके तहद पर्यटन विभाग के लिये यह केन्द्र Portal तैयार करेगी तथा उसमें बौद्ध तीर्थ स्थलों से सम्बन्धित पर्यटन विषयक कन्टेन्ट सर्जना कर upload कर Internet पर आरूढ़ करने के उपरान्त पर्यटन विभाग को सौंपे जाने के प्रावधान के अनुसार प्रक्रिया जारी है। e-Tourism में कन्टेन्ट संरचना का कार्य सम्प्रति चल रहा है जो CD पर सुरक्षित किये जा रहे हैं।

(द) ज्ञानोद्योग कार्यक्रम

ज्ञानोद्योग शिविर जुलाई-अगस्त में आयोजित करने का प्रस्ताव है एवं इससे संबंधित आवश्यक कार्यवाई की जा रही है।

(इ) प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

C-DAC निर्मित GIST सॉफ्टवेयर के प्रायोगिक उपयोग पर प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम दि. 26.05.2003 से 31.05.2003 को सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमें कुल 19 प्रशिक्षकों ने भाग लिया।

इस क्रम में पटना स्थित विद्यालयों, महाविद्यालयों, सॉफ्टवेयर उत्पादकर्त्ता एवं आपूर्तिकर्त्ता-फर्मो से GIST-SDK में प्रशिक्षण हेतु अपने-अपने कार्यालयों से इस विषय से सम्बद्ध शिक्षकों/कर्मियों को नामित करने हेतु अनुरोध पत्र निर्गत किये जा चुके हैं।

अन्य प्रशिक्षण

जुलाई के अन्त तक ISM2000 एवं एतद विषयक अन्य S/W में विद्यालयीय छात्र / छात्राओं को प्रशिक्षण प्रदान करने की योजना है। विद्यालय का चयन कर लिया गया है।

इस केन्द्र द्वारा शीघ्र ही एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का प्रस्ताव है (संभवतः अगस्त-सितम्बर 2003 में)

(फ) अन्य गतिविधियां

सरांश (Content) की मौलिकता (Authentication)

कन्टेन्ट सर्जना के लिये प्राप्त डाटा की मौलिकता (Authentication) की जॉच करने के उपरांत दास्तावेजों के अनुसार कन्टेंट सर्जना का कार्य प्रगति पर है।

वेवसाइट निर्माण (Design & Creation of Website)

M/S ERNET India से वेब साइट (Web site) निर्माण करने एवे उसे अन्तर्जाल पर आरूढ़ करने हेतु आवश्यक कार्य किये जा रहे हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी के वैश्वीकरण (Globalization) एवं अन्तर्राष्ट्रीय करण के इस युग में राष्ट्र की सीमाओं के परे मुक्त व्यापार की व्यवस्था एवं अन्य नयी अर्थव्यवस्था के अनुरूप भारत के सामन्य जनमानस को लाने के लिये लोकीकरण की मूल आवश्यकता है। इस लोकीकरण के क्रम में भाषा संस्कृति का प्रौद्योगिकी संशलेषण किया जाना आवश्यक है। विविधताओं और विभिन्नताओं से संस्कृति की अभिवृद्धि होती है। विविधताओं में एकता का समावेश प्रगतिपरक होती है। लाकीकरण की प्रक्रिया स्थानिकता से वैश्वीकत्ता की यात्रा है। ``तमसो मा ज्योतिर्गम`` की सूत्र-साधना लोकीकरण से ही संभव है।

इस CoIL-Net परियोजना की समाप्ति तक इस केन्द्र द्वारा राज्य की प्रकृतिदत्त योग्यता (Natural talent) उत्कृष्ट पारंपरिक संस्कृति (Tradition) तथा एलेक्ट्रोनिक स्वास्थ्य (e-Health), एलेक्ट्रोनिक पर्यटन (e-Tourism) एवं एलेक्ट्रोनिक शिक्षा (e-Education) के जॉच क्षेत्र (Test Bed) विकसित हो जायेंगे जिसके तहद भूमि विषयक् सूचना आधार (Data Base), ग्रामीण दवाइयों (Herbal Medicines) का ऑनलाइन प्रसारण, पर्यटक सूचनाएँ भी Websites पर उपलब्ध होगें। केन्द्र द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित एक पुस्तक भी हिन्दी में तैयार किया जायेगा।

इसके अतिरिक्त 10+2 स्तर के छात्रों एवं स्थानीय उनलोगों द्वारा वांछित बहुचर्चित (Popular) पैकेजों में प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जायेगें।

अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति एवं अत्यन्त पिछड़ा वर्ग तथा आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्गो को आवश्यक प्रशिक्षण मुहया कराया जा सकेगा।

स्थानीय लोक उद्यमों उद्योगों, द्वारा प्रतिनियोजित व्यक्तियों को भी वांछित प्रशिक्षण की पूरी सुविधा प्राप्त हो सकेगी। इस तरह तारहीन सम्बद्ध सभी से कायम कर लघु में महती वौद्धिक क्षमता के विकास द्वारा स्थानिक ज्ञान सामग्री को वेबसाइट लोकीकरण से सर्व सुलभ बनाये जाने तथा अन्तर्राष्ट्रीयकरण एवं वैश्वीकरण का प्रयास संस्कृति जैसे सार्थक प्रयोजन के लक्ष्यों की उपलब्धि हो सकेगी।

साभार : *डॉ. राम सिंहासन सिंह, प्राचार्य-सह-मुख्य अनवेषक एवं श्री डी. पी. सिंह, सह-अनवेषक, CoIL-Net परियोजना, नवीन राजकीय पोलिटेकनिक, पाटलिपुत्र, पटना-800 013*